श्री श्री गौरांगविधुर्जयति

ब्रजभाषा में—

# ...धारमण रस सागर

श्री श्री कविवर मनोहरदासजी कृत

★

अर्थसहायक—

...रनिष्ठ श्रीमान् राजा रघुनंदनप्रसादजी

मुंगेर ( बिहार )

★

प्रकाशक—

बाबा कृष्णदास

...सुमसरोवर, ( गोवर्द्धन ) मथुरा।

सर्वाधिकार सुरक्षित है।

★

...िया

...०८ ]

नौछावर—

[ मूल्य ।)

॥ श्री श्री गौरांगविधुर्जयति ॥

ब्रजभाषा में—

# श्री राधारमण रस सागर

श्री श्री कविवर मनोहरदासजी कृत

★

अर्थसहायक—

गौरनिष्ठ श्रीमान् राजा रघुनंदनप्रसादजी

मूंगेर ( बिहार )

★

प्रकाशक—

बाबा कृष्णदास

कुसुमसरोवर, ( गोवर्द्धन ) मथुरा।

सर्व्वाधिकार सुरक्षित है।

★

अक्षयतृतीया

सम्वत् २००८ ]

नौछावर—

[ मूल्य ।)

# ॥ भूमिका ॥

प्रेम पुरुषोत्तम, प्रेमावतार, भगवान, श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभु ने इस पुनीत धराधाम में अवतीर्ण होकर जगत को जो अपना विशुद्ध प्रेम-रस का सरस आस्वादन कराया है उसका जीव मात्र ही अवश्य महान आभारी रहेगा। श्री व्रज-राजनन्दन हरि का गौरांग रूप से नवद्वीप में अवतीर्ण होने का मूल कारण था अपनी परम प्रेयसी राधिका के भाव प्रेम का आस्वादन तथा साथ ही साथ अनर्पित निज-भक्ति योग का जीव जगत् के लिये दान। श्री प्रभु ने धरा में प्रकट हो कर जगह जगह पर भक्ति विद्यालय की स्थापना कर अपनी प्रेम महाविद्या का जीव छात्रों को पाठ पढ़ाकर, तथा रूप, सनातन प्रभृति पार्षद गणों को अवतारित करा कर उन विद्यालयों में प्रधान २ अध्यापक रूप से नियुक्त किया, जिससे कि प्रेम महाविद्या का दान धारावाहिक रूप से चल सके। उन विद्यालयों में नाम सं कीर्त्तन पाठ ही प्रधान रूप से रखा गया। बृन्दावन नवद्वीप और नीलाचल क्षेत्र ही प्रधान विद्यापीठ रूप से माना गया है। रूप, सनातन प्रभृति प्रभु पार्षदों ने बृंदाबन धाम में आकर उसका पुनुरुद्धार किया तथा साथ ही साथ असंख्य भक्ति ग्रन्थों की रचना कर उन भक्ति विद्यालयों में उन्हें पाठ ग्रन्थ निर्धारित किया। यह सब ग्रंथ अधिकांश रूप से संस्कृत भाषा तथा बंगभाषा और व्रजभाषादि में रचे गये हैं।

गौरड़ेवर सम्प्रदाय में जिस प्रकार संस्कृत तथा बंग भाषा में रचित ग्रंथों की कोई इयत्ता नहीं है ठीक उसी प्रकार व्रज भाषा में रचित ग्रंथों की भी कोई इयत्ता नहीं। बड़े विमर्ष की बात यह है कि व्रज भाषा के वे सब ग्रन्थ अधिक संख्या से न जाने कहाँ

किसके हाथ में पड़ गये। तो भी अत्यन्त चेष्टा के साथ कुछ ग्रन्थों को खोज कर जनता के सामने रख चुका हूँ। अब गुरु वैष्णव कृपा से कविवर श्री मनोहर दास जी के द्वारा विरचित इस "राधा-रमण रस सागर" नामक ग्रन्थ को रसिक समाज के आगे रखने में समर्थ हुआ हूँ। पूज्य बंधुवर गोस्वामी श्री अतुलकृष्ण जी (वृंदावन) के द्वारा उन्ही के पुस्तकालय से ही यह ग्रंथ मुझे प्राप्त हुआ, साथ ही साथ मिलान करने के लिये श्री गोस्वामी अद्वैत चरण जी (बच्चा जी) के पुस्तकालय से (प्रातः स्मरणीय-श्री राधा चरण गोस्वामी जी के द्वारा संचित) एक प्राचीन हस्त-लिखित ग्रंथ मिला। उन दोनों महानुभावों के प्रति मैं तथा भक्त समाज आभारी हैं॥

प्रस्तुत ग्रंथरत्न के निर्म्माण कर्त्ता कविवर श्री मनोहरदास जी महोदय हैं। आप श्री गोपाल भट्ट गोस्वामी जी के परिकर में श्री राधारमण जी के सेवक हुए। श्री रामचरण चट्टराज आप के गुरु थे। ग्रंथकार का विशेष परिचय देना पुनरुक्ति मात्र है। यह महाशय भक्तमाल के प्रसिद्ध टीकाकार श्री प्रियादास जी के गुरुदेव थे। इन्ही के कृपा बल से श्री प्रियादास महोदय भक्तमाल की टीका लिखने में समर्थ हुए। भक्तमाल टीका के प्रारम्भ में स्वयं प्रियादास जी कहते हैं कि—

महा प्रभु कृष्णचैतन्य मनोहरण जू के चरण को ध्यान मेरे नाम मुख गाइये। ताही समै नाभा जी ने आज्ञा दई लई धारि, टीका विस्तारि भक्तमाल की सुनाइये॥ इत्यादि।

निःसंदेह कविवर मनोहर जी उस समय वृंदावन में परम रसिक शिरोमणि माने जाते थे। बड़े बड़े महानुभाव आकर उन के संसर्ग से रसिक बन जाते थे। इस विषय में टीका के परिशिष्ट में प्रियादास जी कहते हैं कि:—

रसिकाई कविताई जाहि दीनी तिन पाई,
भई सरसाई हिये नव नव चाय हैं।
उर रंग भवन में राधिकारमण बसैं,
लसैं ज्यों मुकुर मध्य प्रतिबिंब भाय हैं॥
रसिक समाज में बिराज रसराज कहैं,
चहैं मुख सब फूलैं सुख समुदाय हैं।
जन मन हरि लाल मनोहर नाम पायो,
उन हूँ को मन हरि लीनौ ताते राय हैं॥ क० ६२७॥
इनहीं के दास दास दास प्रिया दास जानौ,
तिन लै बखानौ मानौ टीका सुखदाई है॥ इत्यादि

प्रस्तुत ग्रंथ का रचना काल १७५७ संवत् है इस ग्रंथ में श्री राधा रमण जी का हर ऋतु में हर प्रकार का शृंगार, भोग, शयन, विलास आदि सरस भाव से वर्णित है। इस में भी सारी शुकों का परस्पर प्रेम कलह विशेष आस्वादनीय वस्तु है। इस ग्रंथ के बारे में अधिक क्या कह सकता हूँ सामने रखा है रसिक पाठक देख लें। आशा है रसिक समाज इस ग्रंथ को कंठ धन कर के इस से श्री राधा-रमण जी की दैनन्दिनी सेवा परिचर्य्या का सरस अनुभव करेंगे। मनोहर जी के द्वारा रचित और भी अनेक ग्रंथ हैं। संप्रति हमारी खोज में रसिक जीवनी, सम्प्रदायबोधिनी नामक दो ग्रंथ प्राप्त हुए हैं। "कृष्णदागीति चिंतामणि" ग्रंथ भी इनके द्वारा विरचित है ऐसा अनुमान किया जाता है क्योंकि उस में अधिकांश पद मनोहर जी के हैं। और भी इनके द्वारा रचित महाप्रभु संबन्धी अनेक सुंदर पद हैं। उन सबको यथा समय प्रकाशित करने की इच्छा है।

वैष्णवदासानुदास—
कृष्णदास।

॥ श्री राधारमणो जयति ॥

## अथ श्री राधारमण रस सागर नाम लीला लिख्यते

प्रथम प्रणाम गुरु श्री रामसरण नाम,
चट्टराज चरण सरोज मन भायौ है।
कृपा करि दीनी दिक्षा सिक्षा परिचर्य्या निजु,
राधिका रमण बृन्दाबन दरसायौ है॥
सद्गुण समुद्र दयासिंधु प्रेम पारावार,
सील सदाचार कौ कवित्त जग छायौ है।
ता दिन सफल जन्म भयौ है अनाथ बंधु,
मनोहर नाम राखि मोहि अपनायौ है॥ १॥

छप्पै—श्री चैतन्य कृपालु कृपा करि भट्ट गोपालै।
तिन श्रीनिवासाचार्य्य वर्य्य करुणा कौ आलै॥
रामचरण तिन कृपा चक्रवर्त्ती विख्याता।
रामसरण चट्टराज कृपा तिन सारहि ज्ञाता॥
शुद्ध भक्ति रस राग तिन करुणा करि दीक्षा दई।
दास मनोहर नित्य गुरु पद धूली सिर पर लई॥२॥
जिनके सब अवतार सकल गुन आगर दरसैं।
अवतारी नंदलाल ख्याल अतुलित रस बरसैं॥
अलप बहुत गुननि रखि हरषि अनुगुन अनुसरहीं।
पात्र काल अरु देस लेस सेवन मन धरहीं॥
सेवा जगत उद्धार हित कोउ लछ नाहिंन कियौ।
करुणा विभु चैतन्य प्रभु सरण मनोहर कौं दियौ॥ ३॥

सर्वस राधारमन कवन सेवा सुख बरनें।
छिन छिन नव नव राग रसिक नागरि मन हरनें।
सदाचार दृढ़ भजन स्वजन चित हित सौं पोषत।
कामादिक परपंच रंच दरसन दै सोषत॥
संत सभा जगमगि रहे परत नहिं गुन गनन।
दास मनोहर अननि गति श्रीगोपालभट्ट प्रभु तुम सरण॥ ४॥
द्वितीय शिष्य अद्वितीय देववन बासी भूसर।
गौड़ श्री गोपीनाथ गुसांई गुरु सेवन वर।
करुणा करि श्री भट्ट गुसाईं कियौ अधिकारी।
श्री राधिका—रमण सोंपि सेवा सुठि भारी।
हरिनाथ मथुरादास हरिराम जु निज अनुगत कीये।
इनके वंश प्रसंश मनोहर परिचर्य्या चित वित दिये॥ ५॥

॥ अथ जन्म लीला ॥

कवित्त—

ठाढे ब्रजराज पुरोहित भागुरी कौं लियें,
मुनि गन वेद धुनि यथा योग करहीं।
गागर अनेक मनों जान्हवी यमुन जल,
दासन सुगंधि मेलि स्नान वेदी धरहीं।
सर्बौषधि महौषधि आदि नाना मंत्र पढ़ि,
बाजै गीत जै जै कार कुलाचार टरहीं।
राधिका-रमण जन्म अभिषेक मनोहर,
देख्यौ चाहै नैंन तें न आनन्द सों भरहीं॥ ६॥
बरसानों वृषभान राय घर सरसानों,
कुँवरि बरस-गांठि जानि जग उम है।

जसोमति ब्रजपति बोले हैं सुहृद अति,
तिन संग राधिका--रमण प्राण कों लहै।
वेद धुनि करैं मुनि महा अभिषेक सखी,
साधित बसन आभरण जानत कहै।
भाँति भाँति गुनीजन प्रगट करत कला,
आनन्द उदधि मनोहर मग्न ह्वै रहै॥७॥

॥ तृपदी छंद ॥

श्री राधा-रमण रसिक वर नागर वृन्दा-विपिन बिहारी।
आनंद घन ब्रजराज लाड़िले मिलि वृषभान दुलारी॥
कीरति कुँवरि कुँवर जसुमति के ललितादिक सुखकारी।
रास रसासव मत्त परस्पर अनुपम प्रीतम प्यारी॥
नवल किशोर किशोरी सोंहन भोंह नैंन चहु चारी।
गौर स्याम तन बसन आभरन अङ्ग अङ्ग उनहारी।
उज्जल सागर सब बिधि आगर प्रेमामृत बिस्तारी।
निसि-बासर अनुराग रगमगे सह सात्विक संचारी॥
गान कला संगीत नटन पटु बिबिध यन्त्र गति न्यारी।
सील सुघराई उभै एकरस मूरत दोऊ प्रणय बस भारी॥
सोभित महाभाव भावित रस मन गज बंधन वारी।
अति आसक्त युगल रस भीनें नहिं पटतर पविहारी॥
छिन छिन नव नव महा माधुरी परिजन प्राण अधारी।
अन-गन गुन गंभीर अपरिमित शोभा संपति धारी॥
श्री गोपालभट्ट प्रभु सर्वसधन परम मनोहर बलिहारी॥८॥

कवित्त——

सद्गुण समूह बन्यौ वैशाखी रंगिली पून्यौं,
राधिका रमन मन सखी जन जानिकैं।
अभ्यंग कै उबटि सुगंधि केसन में डारि,
अभिषेक सीतल यमुना जल छानि कैं॥
चंद्रकांति मणि की मटुकी मथना सौं नीर,
भरि भरि ढारै मंजरी में गुन सानि कैं।
नाना मन्त्र ऊखदी विविध बाजे यन्त्र मिलि,
मनोहर गावैं गीत तानन सों वानि कैं॥९
स्नान समापन करि अंगन अंगौछि धरी
कुन्तल निचोरि झारि पवन सुकाइ कैं।
जरी पाग पटुका केसरी उपरेंना झगा,
सूथन मसरू नाना भूषन बनाइ कैं॥
तैसी प्रिया बनि ठनि बाम भाग सिंहासन,
ठाढे गौर स्याम झलकनि रही छाइ कैं।
राधिका-रमण परिजन थाल उतारत
आरती मनोहर निरखि छवि आइ कैं॥१०॥
केसर की भूमिका पै जरी खिरकी की पाग,
झूमिका कनक स्वच्छ मोर पच्छ लटकै।
झगा बूँटेदार दोदामी को कष्ट बार रग्यों,
उपरेंना पटुका सुनेली चित्र चटकै॥
छुद्राबलि बाजूबंद पहुचीयां अतलस
सूथन नूपुर सुर पग चूरो मट कै।
जगमग राधिका रमण सिंहासन ठाढै
मनोहर मन मुसकान माँहीं अटकै॥ ११॥

जेते हरि धाम मध्य मथुरा महत यश,
ताहूतें सरस वृंदाविपिन भवन हैं।
रमा वृन्द वंद्य पुर सुन्दरी बिशेष ब्रज,
कीरति सुता स्वरूप तिन्हू के दवन हैं॥
लीला की विचित्रताई मुरली की सुघराई,
प्रेमाधीन शोभा पाइ सबनु नवन हैं।
जानैं मनोहर मन सर्वोपरि उपासन,
राधिका रमन बिन दूसरौ कवन है॥१२॥
अगणित अवतार निखिल निगम सार,
प्रमदा अपार नित्य दास्य के भवन हैं।
इहाँ छिन छिन मान कबहुँ निदान बिन,
हा हा खाइ हारि मानि सखिनु नवन हैं॥
कबहूँ कपाटी पारें कभूँ अलका सुधारें
कबहूं बिचारें श्रम करत पवन हैं।
मनोहर जल मीन प्रेयसी के प्रेमाधीन
राधिकारमण बिन दूसरौ कवन हैं॥१३॥
पिता ब्रजराज माता यशोदा करोर प्राण,
वारें व्यवहार मार जानें न कवन हैं।
प्रिया मन भाई सोभा गुन की गरुरताई,
किशोरता स्थाई सुघराई की अवन हैं॥
होत ही मनोरथ सकल सोंज पैये तहाँ,
बृंदा टहलनी बृन्दावन सौ भवन है।
निरवधि अवधि मनोहर बिहारी सखी
राधिकारवन बिन दूसरौ कवन है॥१४॥

पतिव्रता सिरोमणि कमला गंभीर गुण,
तिनहूँ उपजै लोभा सोभा कौ भवन है।
सेवन तनक किए मानत अनेक करि,
आपहि बिकाइ ताके गोंहन गवन है॥
मैं तौ कितौ कहूँ भागवत में भरत साखि,
जिनके प्रमाण अर्थवाद कौ दवन है।
मनोहर मन ज्ञाता छवि की अवधि तासु
राधिका रमन बिन दूसरौ कवन है॥१५॥
थिरचर विपरीत यमुना रहित नीत,
सुधि की व्यतीत गीत थकित पवन है।
स्वर परतहीं कान भूली है समाधि ज्ञान,
सबही की एकता न माथे कौ नवन है॥
धुनि गोपिन पै जाइ कृत करिबौ भुलाइ,
आरज छुटाइ पथ पिय पै गवन है।
रीझौ मनोहर मन मुरली प्रताप सुन
राधिका रवन बिन दूसरौ कवन है॥१६॥

॥ अथ—सरद विहार वर्णनं ॥

श्याम सारद प्रदोष श्यामा अभिसार सौंज,
सबनु सिंगार रचि आपुस में रीझी हैं।
तैसोई बनाउ निज देखन न पावै कोऊ,
तोऊ अनुसार चलीं अनुराग भीजी हैं॥
मन कौ उछाह नाह अंग अंग रचि रहे
धीरज धरन नाम सुनि सुनि खीजी हैं।

राधिका रमन कौ मिलाप कौ लखाउ नाह
मनोहर वचन विलास सुनि धीजी हैं ॥१७॥
निसि अँधियारी भारी भृगमद सों सवारी,
प्यारी नील भूषन वसन अंग अंग में।
पिय पै गवन कीनें सखी सुख सुख भीनें
एक तें सरस एक राची प्रिय रंग में॥
अगनित अभिलाष हियें मांह पूरि राख,
आपनपौ भूलि भूलि जात एक संग में।
राधिकारमन देखि जनम सुफल लेखि,
मनोहर नेंन परैं छवि की तरंग में॥१८॥
सरद की रैंनि उजियारी अभिसार प्रिया,
प्रीतम पै सेत सारी खौर अंग कीने हैं।
मालती मुकता मल्ली माल। अंग अंग सोहें,
आभूषन हीरनि जटित रंग भीनें हैं॥
चाँदनी में मिलि चलीं देखन न पावै अली,
अंग की सुगंधि अनुसार कें हूं चीनें हैं।
राधिका रवन मिले मनोहर भाँति भाँति,
खिले नेंन झिले मानो शोभा जल मीनें हैं॥१९॥
प्रिया पीउ सुख सानें दूती के बचन मानें,
अभिसार बानें दोऊ निज निज ठौरतें।
चँदन चरचि गात सेत बागे फहरात,
उजियारी रात निकसे हैं पच्छ पौर तें॥
संकेत में आइ मिले निरखत नेंन खिले
हाव भाव झिले उभ रस भरे गौर तें।

चले राधिका रमन वहाँ जोटी बृन्दावन,
बचन स्वन से अमी छूटें चहुँ ओरतें ।२०॥
गुरु जन बचन की घातें बहु मातें करि,
चली हैं लडेंती सेत भूषन बसन हैं ।
तैसे परिजन बनें एक रस एक मनें,
प्रिया सुख सनें त्रिगों सरस हसन हैं ॥
मिलिबे के मनोरथ फैलि रहैं अंग अंग
श्रमनीर वारें पौंन प्रेम कौ कसन हैं ।
रमण मिलाप राधा पूजी हैं दुहुनि साधा,
मनोहर नेंन शोभा सागर धसन हैं ॥२१॥
राधिका-भिसार सुनि चले हैं रमण लाल,
उतावल मलयज खौर सी बनाइ कैं ।
देह की न सुधि बेस भूषण बनावै कौन,
अस्त व्यस्त चतुराई मानत सरबाइ कैं ॥
पथ अनपथ कछू भावै न विचार ढार
सुरत सखी लै चली मन बहराइ कैं ।
दोऊ ललचौंहैं नेंन चह चारी सेंना बेंन,
देखत मनोहरनि पटनीरें आइ कैं ॥२२॥
छप्पै।—सजलजलद तन दमक चमक चख चकित तडित पट ।
मोर मुकट भ्रल मलै चलै मृदु मरुत जमुना तट ॥
अंग तृभंगी बलित ललित भूषन मनरन्जन ।
अरुण अधर मधु बेंन नेंन नृत्यत युग खंजन॥
छरी टेकि दच्छिण भुजनि मणिकुंडल मंडित श्रवण
वाम मनोहर दाम बन जै जै श्री राधारमण ॥२३॥

सारद विमल राका उडपति उदै देखि
फूले द्रुम बल्ली मल्ली आदि अधिकाई है।
चाँदनी हू चहुँ ओर पत्र पत्र फैल रही,
दक्षिण पवन मंद मंद गति भाई है॥
कोइल मधुप धुनि सुनि सुनि रैंन सुख,
राधिका रमण कल वंशी तान गाई है।
मनोहर-ताकी सीवां श्रवण परसि ग्रीवां,
भूमि ब्रजबाला प्रीत नख सिख छाई है॥ २४॥
तैसी रही जोइ सोइ चली है तमकि तैसी,
काहू की न मानें कोऊ आतुरता बढ़ी है।
अस्त व्यस्त भूषन बसन मन मन काज,
मनमथ राज चटसार मानों पढ़ी है॥
सनमुख नाद सुधी गति में न भई बाधा,
आगें पूजी साधा प्रेम गजराज चढ़ी है।
रमण सौं मिली राधा शोभा सिंधु तें आगाधा,
मानौ हर मूरति सनेह साँचे गढ़ी है॥ २५॥
देखते ही राधिका रमण भाव सबन के,
उठे अनगनित न ओर छोर पावहीं।
वचन विलास भए प्रेम कसि कसि लंए,
एक तें सरस एक तन मन भावहीं॥
हँसि मुसकाइ सैंन नैंनन नचाइ शोभा,
संपति दिखाइ सुघराई ठौरि लावहीं।
मनोहर सबै भाँति फूले अङ्ग मैंन मात,
उमगि उमगि उभै गुन गन गावहीं॥ २६॥

जमुना पुलिन माहिं नलिन सुगंधि लै लै,
सीतल समीर धीर बहै चहूँ ओर तें।
फूली हैं विचित्र कुँज गुँजत मधुप पुँज,
कुसुमित सेज प्रिया पीय चित चोर तें॥
हास परिहास रस दुहूंनि प्रणय बस,
सुघराई बैंन सेंन नैंनन की कोरतें।
राधिका-रमण प्रीति छिन छिन नई रीति,
मनोहर मीत मिलि खेलें नेह जोरतें॥ २७॥
सब ब्रजबालन के कीनें परितोष महा,
नागर शिरोमणि प्रकाश अनकूल हैं।
अरस परस रस चातुरी बिलास बस,
एक तें सरस एक सुघराई मूल हैं॥
राजा मनमथ नीकैं सिंगारयौ अपने हाथ,
शोभा के समूह नख सिख फबे फूल हैं।
राधिका-रमण चित्रनायक अभूत देखि,
मनोहर मन कों अपनपौ कों भूल हैं॥ २८॥
अपनें अधीन कीनें राधिकारमण लाल,
श्रम जल सीकरनि कर शोभा देत हैं।
मलय पवन जाल रंध्रन प्रबेस पाइ,
अंग अंग अनकूल सेवा सुख लेत हैं॥
भरे घर के से चोर मनोहर तें न भए,
अवलोकैं पौरुष मनोज महा खेत हैं।
रीझि रीझि बलिहारी तृण तोरि तोरि डारि,
एक तें निपुन एक रस के निकेत हैं॥२९॥

अरस परस बेष भूषन बसन सजे,
बजे निकसे हैं कुँज कुँज ते खिलोंना से ॥
नख सिख दूनों रङ्ग राधिका रमण सङ्ग,
सोहें अंग अंग मनमथ के विलोंना से ॥
निपट सनेह मेह देह की न सुधि जहाँ,
सोभा औ सुठैनता के रोचक सलोंना से ।
याही रस मनोहर भीज रहें रैंन दिन,
ऐसें बिनु और स्वाद लाजत अलोंना से ॥३०॥
सरद की चांदनी रही है दशों दिशा छाइ,
कुसुमित कुँज अलि पुँज गुँज माधुरी ।
दोऊ बागे उज्जल सिंगार रचि बैठे सेज,
बिछौंना रहे हैं खुलि मानों मन साधुरी ॥
हास परिहास पगे लाल अति रहस की,
कहें तें चितवें प्यारी नेंनन के आधरी ॥
राधिकारमण मनोहर उतर न देत,
दुहुँन के मन भयौ आनन्द अगाध री ॥ ३१ ॥
बिहरत बृन्दावन राधिका रमण सोहें,
मोहें सहचरी साथ गाथ में बिपुन है ।
बरनत मँजु कुंज बेली द्रुम अलि गुँज,
कोइल चकोर मोर बन उपवन है ॥
पुलिन सौं मिलौ राधा नायक किरण देखि,
अलंकार उतप्रेक्षा उपमा में पनु है ।
शोभा कहि सकै कौंन तातें धरि रहै मौन,
आनन्द कौ भौंन जानें मनोहर मन है ॥ ३२ ॥

देखत स्वपक्ष औ विपक्ष कै सुहृद पक्ष,
कोउक तटस्थ पक्ष प्रमदा समाज है।
प्रेम की कुटिल गति प्रणय बसौ हैं अति,
हियै मान मडराइ कीनों कछु काज है॥
चली है सबन छाँड़ि राधिका तिन के पाछें,
रमण विमन संका उपजी त्यौं लाज है।
निपट अधीन हीन देखि मुसकानी प्यारी,
मनोहर प्राण पाए रह्यौ रस आज है॥ ३३॥
आगे ह्वै भरौसौ बाँधि राधिका रमण लाल,
गहि लए हाथ साथ चले शोभा पाये हैं।
रस रिस भरी भोंहें लोइन चपल सोंहें,
वचन बिलास गाँस हास उपजाये हैं॥
गरवाहीं गवन की माधुरी मनोहरन,
बातें सुनि सुनि कोऊ दोऊ मन भाए हैं।
छवि की तरंग रंग अंग अंग छाइ रही,
कही न परत रस रस ही रिझाए हैं॥ ३४॥
विपिन बिहार बस राधिका रमण रंग,
रंग के कुसुम साखा ऊँचे ते उठाए हैं।
सुमन बिछोंना मधि लाड़िली सुधारि केस,
रच्यौ है सुबेष फूल आभूषण भाए हैं॥
प्यारी अपनें सुरंग कर में किशोर जोर,
चित्र से सवाँरि साज पुहुप बनाए हैं।
निरखि मनोहरन बाम कनक वरन,
मुख चंद शोभा अमी नेंन मन छाए हैं॥ ३५॥

माधुरी निकुँज पुँज पुँजन मधुप गुँज,
पिक की कुहुक नाना रंग पंछी झूले हैं।
मधि सुगंधि अति कोमल कुसुम दल,
सेजहि सँवारि त्यौं मन ही मन फूले हैं॥
दोऊ रस सागर परम सुघराई सींउ,
वचन बिलास भेद उभै अनुकूले हैं।
राधिकारमण धाम अंग अंग अभिराम,
मनोहर गौर स्याम सोभा समतूले हैं॥ ३६॥
राधिकारमन नाम कीनें हैं सफल आज,
छाडिकै समाज प्यारी सङ्ग रंग भीने हैं।
चातुरी परम रस माधुरी महामनोज,
निरखि निरखि प्राण वारि वारि दीने हैं।
उभै रस सार सिंधु उमगि खुलि मिलाप,
प्रेम के प्रताप जोर दोऊ ओर कीनें हैं।
मनोहरताकी रासि कुटिल कटाच्छ हास,
भौंहनि बिलास सोभा संपति कों छीने हैं॥३७॥
राधिकारमण महा नागर सिरोरतन,
करत विलास रास समाधान चहिये।
एक मतौ होइ सोई कीजियै जुगति तामें,
प्रमदा अनेक बातें कासौं कासौं कहिये॥
एतक बिचार लाल तमाल विपिन मांझ,
ढरि रहे निकट दरस प्यारी लहियै।
दुहुँन की गति देखि भई है चकित मति,
मनोहर कौन भाँति प्रेम गली गहियै॥ ३८॥

याही बीच और ब्रज सुंदरी सबनु राधा-
रमण फिरत ढूँढि मति भई बावरी।
जिते वृक्ष बेलि मृग मृगी अवनि बिहंग,
पूछत कितहूँ देखी मूरति सु साँवरी॥
ऊतर न कहूँ पाइ तनमई भई लीला,
प्रिय अनुकरन करत बाढी भावरी।
मनोहर ढिग गही चरन चिन्ह पाछे प्रिया,
सहित सुहाग देखि आइ गई तांवरी॥३६॥
पाछे विरहिनि राधा विवस रमण खेद,
प्रेम की प्रबलताई देखें हियौ करषै।
प्यारी सुथराई लखि सवन की सुधि गई,
थरहर करै सीउ नेंना मूँदे बरषैं॥
सिगरी तरुणि मिलि लाड़िली जू थाह्म थाह्म,
ठौर ठौर अवलोकैं अंतर अमरषें।
आगे अँधियारि जोर निरखि मनोहरन,
चाँदिनी में बैठी जाइ गाढी बाढ़ी तरषै॥४८॥
सबै इक सार मन व्याप्यो है विरह तन,
मिलि गुन गावें सब ध्यावैं मुख चंद कौं।
सोरठा की जी ला तान करषत प्रिय प्राण,
नेंक हूँ न समाधान आवै ब्रज चंद कौं॥
औचक उदित बीच राधिका रमण सिंच,
सुधासार नीच ऊँच मेटी मेंड बंद कौं॥
जीउ आऐं जैसी देह ग्रीषम बरषा मेह,
मनोहर नेह को छुड़ाइ सकै फंद कौं॥४१॥

राधिकारमण ब्रज सुन्दरी सहित बन,
बिहरत नृत्य नाना भाँति कौतूहल में।
दोऊ तन एक जीउ मेलि भुज ग्रीउ ग्रीउ,
नागरता सींव प्रगटी है प्रेम बल में॥
बिबिध प्रबंध गांन उदित उपज तान,
सुघराई मान अंग परसत पल में।
नेंनन में रीझ दान भेद भरी मुसकान,
देखिबे की बानि मनोहर भाग फल में॥ ४२॥
कुसुमनि रहे फैलि मनोहर वृक्ष बेलि,
हसन सुगंधि रेल पवन हलत हैं।
चांदनी रही है खिलि राधिकारमण मिलि,
देखौ बलि चलि नेंना चहूँ घाँ चलत हैं॥
सोभित बिहार बन फूलन के आभरन,
गौर स्याम तन छल बल सौं ललत हैं।
अधर अरुणताई बातन में चतुराई,
सेंना बेंनी सुघराई प्राणन पलत हैं॥ ४३॥
बृंदावन फूले भूले कोइल भँवर मोर,
चातक चकोर कोलाहलनि मचाए हैं।
राधिकारमण बिहरन मंद मंद गति,
नख सिख मिलिबे कूँ चाय चरचाए हैं॥
जाइ देखें सोइ मनोहर प्यारी अनुकूल,
बाँधि कें प्रबंध सुख सार रस चाए हैं।
हँसि हँसि हाथनि सों हाथ जोरें मुख मोरें,
नेंन सों जुरत नेंन मेंनन नचाए हैं॥ ४४॥

आगें पाछें ललिता विशाखा बीच प्यारों पीउ,
अंस भुज मेलि माते गज लौं ढरत हैं।
चहूँ ओर सखिन समाज थांभि थांभि चलें,
राखि न सकत मन भाँव तो मुरत हैं॥
प्रिया कौ वदन हेरि उपमा कौं बारि बारि,
प्रीतम निहाल नैना नैंन सों जुरत हैं।
राधिकारमण बन बिहरन देखि देखि,
मनोहर मन जानें मूरति सुरति हैं॥ ४५॥
चहूँ ओर सखिन के पुंज फूली कुँज कुँज,
राधिकारमण धीरें धीरें बिरहत हैं।
मणिहूँ तें पानिप सुगंधि कुसुमनि लै लै,
प्यारी अंग आभरण रचना करत हैं।
श्रुति फूल पहिराइ हेरि रीझ बलि बलि,
कहत कहत लाल अखियाँ भरत हैं।
लाजन कै काज घूँघट की ओट करैं तब,
मनोहर हा हा खाइ पाइन परत हैं॥ ४६॥
यमुना के पास रास मंडल फटिक मणि,
जटित मुकत माथें काछिनी सुधारिकैं।
लेत हैं बिकटगति उघट रह्यौ है छाइ,
तैसौई मृदंग यंत्र सुर मणि खारि कैं।
रहस बहस राधारमण रिझावन कों,
एक तें सरस एक परन संभारि कैं।
छांके थाके मनोहर सुघर समाज आज,
फेर फेर देत प्राण मानस में बारि कैं॥ ४७॥

लाल लै मृदङ्ग रङ्ग भरे रास मण्डल में,
लेत हैं दुरूह ताल रिझवत भामिनी।
नृत्यन लडैंती गावैं ललितादि भूमि भूमि,
उघटत कोऊ कोऊ दरसन कामिनी॥
यंत्रन के सुरन सौं सबन मिलाइ सुर,
उठत तरङ्ग तान मन अभिरामिनी।
राधिकारमण रीझ भूषण उतारि देत,
देत बकसीस रीझ मनोहर स्वामिनी॥ ४८॥

॥ हेमन्त विहार वर्णनं॥

सरद के उपरान्त हेमन्त रह्यौ है बनि,
दुत ही दुलाई जरवक्त हू सुहाये हैं।
जटित मुकट पाग जरकसी काहू समें,
पाम रीथि रमा चित्र दोऊ मन भाये हैं॥
मखमल खचित बिबिध नग पगन मैं,
मगन बन बिहार बतरस लाये हैं।
राधिकारमन मनोहर बिवि बेंन देखि,
शोभा के सरस ऐंन नेंनन में छाये हैं॥ ४९॥

॥ अथ सिसिर विहार वर्णनम्॥

बासर में रविकांत मणि कौ भवन भावै,
जटित कवाई आभूषण भाँति भाँति के।
रैंन माह मणिक के मन्दिर बयारि रोकि,
बार नें अँगीठी सोहें उपरेंना गात के॥
रजाई निहाली और रेसमी पसमीबाब,
बरनों कहाँलों सुर बानों मिही जात के।
हैम रितु राधिकारमण मनोहर देखि,
एक तें सरस एक बानिक सुहात के॥ ५०॥

मुख सोधि प्रात मिश्री माखन मलाई मेवा,
स्नान कै सिंगार पकवान आगें धरहीं।
पाछें घीउ खीचरी संधानों दही भूंज्यौ छक,
राजभोग खीर रोटी भात थोरी भरहीं॥
कढ़ी बरीं दारि दारि भात तरकारी तरी,
खाटे मीठे चरपरे घृत भोग करहीं।
उत्थापन संध्या भोग निसा भोग मनोहर,
राधिकारमण सीत सुख अनुसरहीं॥ ५१॥
राजभोग राधिकारमण नेंन चेंन देत,
खीर मिश्री मैदा फूल रोटी सुथराई है।
भात अति सुच्छ सुख दास कौ कनक थाल,
सालन बिबिध बिसनौटी सुघराई है॥
सबनु मसालौ घीउ बरी दरे रायत्यो त्यों,
पकौरी कढ़ी संधानौ मठा चतुराई है।
केशर कपूर केलि आदि सिता दूध भोग,
रसिक मनोहर के नेंनें सुखदाई है॥ ५२॥
हिम रितु बैनी भूल भँवा चोली सीस फूल,
कुंडल बंदन बैंना नासा मोती हाल है।
चम्पलरी चम्पकली मोहन मुकता फूल,
माला धुक घुकी बाजू बन्द चौकी लाल है।
इन्द्र नील चुरीं लगि कंकन सुदरी नीवी,
छुद्रावली गूजरी त्यौं नूपुर रसाल है।
महा उर अंजन चिबुक बेंदी मनोहर,
राधिकारमण ढिग सोहें प्यारी बाल है॥ ५३॥

सिसिर में अतलस अतरौटा छाप दार,
सारी ककरेजिया किनारी बूंटा चमकैं।
नील कँचुकी चिकन कबहूँ अरुण सबै.
थिरमा रजाई सुर बारौ बन्यौं खम कें॥
जरकसी उढ़नी मुकेशी कभू भाँति भाँति,
चहूँ ओर फुंदी मोती झालरि त्यौं झमकैं।
राधिकारमण मनोहर वाम भाग प्यारी,
रङ्ग भरे गौर श्याम अङ्ग दुति दमकै॥५४॥
मणि कौ भवन रोकि बारनौं पवन बैठे,
राधिकारमण सेज कोमल सुरंग हैं।
अरस परस चौंपछिन छिन दूनी ओप,
हसन प्रसाद कोप छबि की तरंग है॥
नेह रंग राते मन अगं अंग आभरन,
केसर सुगन्धि गुन समद कुरंग है।
सिसिर बिहारी रीत दोउ मनोहर मीत,
सुधि की व्यतीत खूंदि लोइन तुरगं है॥५५॥

॥ बसन्तबिहार वर्णनं ॥

रितुराज आगम सुगम बृक्ष बेली फूल,
झूलत मधुप झौंरा सुर सुर साल हैं।
मोरे हैं रसाल स्वादी कोकिला कलोल करैं,
भरैं राग पंचम परमावधि के ख्याल हैं॥
राधिकारमण वन बिहरन मय मंत,
मखी लै बसन्त आगैं धारें धरैं हाल हैं।
तैसे धुरपद गावें रीझ अभिनै बनावें,
पावें निरखन मनोहर भाग भाल हैं॥५६॥

आगम बसंत रसबंत प्रिय परिजन,
बन उपवन सोभा सम्पति सौं छाये हैं।
स्वकर कुसुम जल छिरकी पराग बुका,
चन्दन कपूर लै गुलाल लपटाए हैं॥
अरस परस राधारमण सुमन गेंद,
सखिन समाज खुल खेल त्यों मचाए हैं॥
नैंनन नचाइ भौंह भेद सतराइ प्यारी,
कन्दुक चलावै मनोहरन बचाए हैं॥५७॥
केसरी सुथरी पाग सिरी साफ झीनो झँगा,
हरी धारी सूथन पटुका सेत पहरें।
थोरे थोरे भूषन गुलाल फेंट भरि भरि,
पिचकारी हाथ साथ रंग भरे गहरें॥
गावै गारी चपल खिलार अभिनय करें,
उमड़ें सयूथ प्यारी सिंधु की सी लहरें।
दामिनी सी कौंधनि भरनि राधारमण कों,
मनोहर आवनि उलटि करें कहरें॥५८॥
सारी तन सुख सनी कंचन किनारी बनी,
बांधी कसि तनी अंगी सेत बूँटी हरी है।
अंग अंग सुरसाल जगमग नग लाल,
फेंटनि गुलाल चौंप चतुराई भरी हैं॥
पिय पैं रमकैं जोर मांडन बदन रोर,
खरी झकझोर आँखि आँजिबेकौं अड़ी हैं।
राधिकारमन यातें करें भजिबे की घातें,
मनोहर बातें सुनिबे की बानि परी हैं॥५९॥

खेलत धमारि वृंदावन बनैं पिया पीउ,
जीउ की छपाई बातें प्रगट करत ह।
बाँटि लीनों सखी सौं जगावत अनूठे चोज,
उपज मनोज हासी हिय कौं हरत हैं।
सैंन दै झमकि दौर सबन मचाई रौर,
धूँधरी गुलाल करि सोंधे सौ भरत हैं।
राधिकारमण कितौ यतन बनावैं तऊ,
श्यामा भावै करैं मनोहरन टरत हैं॥ ६०॥
सबन के हाथ पिचकारी भारी उतावल,
छबि सौं सुगंधि खेंचि डारैं चहूँ ओर तें।
भीजे अंग अंग सोहैं मोहन मदन मोहैं,
फरकत भौंहैं बेंन नैंनन की कोर तें।
बोलनि हँसनि चोज मन के मथन मौज,
कथन न मानें कोऊ दोऊ दिसा रोर तें॥
राधिकारमन चक्राकृति फिरें मनोहर,
रंगनि भरन बचावनि ठौर ठौर तें॥ ६१॥
दुहूँ दिसा खेल बन्यौं दुहूँन झगरौ ठान्यौं,
काहू कों न मान्यौं कोऊ चौंप भरि भरि कैं।
बाढ़ी पिचकारी मार छुटे केस टूटे हार,
देह की संभारि नाहीं माहीं रहे अरि कैं।
दौरी सबै सेंन दियें गहैं चकचौंध कियें,
राधिकारमण जीयें हियें भरि धरिकैं।
अरगजा सीस ढारे मनोहर नेह चोरें,
कोंन श्याम गोरें भोंरें भायौ परिकर कैं॥ ६२॥

खेलन में आड़े हाथ लीनें है दंपति दौरि,
राधिकारमण गाढें गहे नाहीं छोरहीं।
प्रिया हंसि बाँयें हाथ घूंघट कों पटतारि,
दाहिनें चिबुक गहि नेंन सेंन जोरहीं।
बार कों सवारि हेरि चोटी गुहि पाटी पारि,
लहंगा अगीया सारि लखि मुख मोरहीं।
आँखि आँजिवे की बार बहुत संभार करें,
लोइन मनोहर छबि सों चित चोरहीं॥ ६३॥
दोऊ सेत बागे बनें होरी खेल सुख सनें,
काहू कों न कोऊ गनें घनें रंग रचे हैं।
कर पिचकारी धरैं रंगनि उमगि भरें,
उर मोती माल रूरें जरे नेंन नाचे हैं॥
चोख की रंगीली यातें करत अनूठी घातें,
प्रेम रस माते बातें कोक कला बाचे हैं।
राधिकारमण देखें मनोहर अनिमेखें,
जनम सफल लेखें सोभा सिंधु सांचे हैं॥ ६४॥
तिखने अटारी जारी रंध्रन मलय चारि,
पवन पराग लै लै खेलत धमार हैं।
जटित पलंग पर गुलाबी बिछोंना फबि,
छबि मद माते नेंन बेंनन खुमार हैं।
हाव भाव भोंहें तिरछोंहें मोंहें मोंहें लेत,
करत कटाछें आछें लागत समार है,
मनोहर गौर श्याम राधिकारमण नाम,
कीरति कुंवरि ब्रजराज कौ कुमार है॥ ६५॥

लता सों लपटीकुंज कुसुमनि पुंज पुंज,
अलि बृन्द गुँज पिक पंचम कहत हैं।
सीतल सुगंध अति दक्षिण पवन मन्द,
उपज आनन्द जाल रंधन बहत हैं॥
रगमगौ रितुराज फूलनों बिछौना साज,
मत्त भए आज रस राज कौ लहत हैं।
राधिकारमण रंग मनोहर अंग अंग,
छवि की तरंग न्याय नैंन न गहत हैं॥ ६६॥
पंच रंग कोमल सुगंधि कुसुमनि गूँथि,
चमकायौ डोल डोरी खँभ रचि पचि कैं।
नख सिख फूलनि के आभूषन लटकाइ,
राधिकारमण मिल बैठे सोभा सचि कैं।
झुलावति ललिता विशाखा मंद मँद सुर,
गावैं सुघराई बीच तानन सों सचि कैं।
मनोहर गौर स्याम केसी उपकंठ धाम,
आनन्द उदधि संग रंग रह्यौ मचि कैं॥ ६७॥

॥ अथ ग्रीषम विहार वर्णनं ॥

इंद्रनीलमणि श्याम सुन्दर निदाघरितु,
थोरे थोरे भूषण मुकता माल पहरै।
झीनी धोती सेत पै किनारी लाल उपरैना,
पीरे मोहिं अंग अंग झलकनि लहरैं।
तिलक बनाइ भाल बाहु वक्ष कक्ष खौर,
केसरी पगिया मोर चँदा ब्यार फहरैं।
राधिकारमण प्रिया मिल बैठे तहखानें,
मनोहर नैंन शोभा सिंधु पैठे गहरैं॥ ६८॥

चादर जल की चारों ओर छुटें उपरतें,
नीचे जल जंत्र ढ़िग ढ़िग सोभा देत है।
बीच परिजंक-मणि जटित कुसुम सेज,
फुहीकन लागत सुहाई मुख लेत हैं।
राधिकारमण मिलि मलयज बागे बनें,
बैठे हास परिहास रस महा हेत हैं।
मनोहर बीजन मधुर तें न जा नी जात,
पावस निदाघ किधों सीत के निकेत हैं॥ ६६॥
मन्दिर मणिन बहु बितत अनेक द्वार,
खँभ चहूँ ओर जल छूटत न लच्छ हैं।
बीच में उसीर कुंज ऊँचीबौरी उपरते,
अनुछिन यंत्र छिरकाउ तोय स्वच्छ हैं॥
सीतल सुगन्ध मन्द झरोंखाँ झमक पवन,
राधिका रमण सेज कुसुमित कच्छ हैं।
ग्रीषम विहार बातें मनोहर देखें सुनें,
जानत है रोम रोम श्रवण कि चक्षु हैं॥ ७०॥
केसरी खिरकी पाग भूमिका बिसद बनी,
झीनों झँगा बूँटा सेत मोती श्रुति सोहनें।
वक्ष के बसन अरगजा लाए चोबा कच्छ,
नख सिख छिरकि गुलाब जल जोंहनें॥
सुमी की सूथन पग नूपुर मुकत माल,
लाल करै बाल ख्याल मनोहर मोंहनें।
राधिका-रमण जल जंत्र के भवन ठाढे,
मलय पवन सेवा साधें परयौ गोंहनें॥ ७१॥

तन सुख सारी में किनारी जग मग जोति,
अतरौटा अतलस नील पीत धारी हैं।
सोंधें सनी आंगी मिहीं हरी कोर कसि बांधी,
राधिका रमण मन गज बंध बारी हैं॥
चोटी बेंना आड़ नासा मोती औ चिबुक बेंदी,
अञ्जन विशाल नेंन त्यों कटाच्छ कारी हैं।
तपरितु थोरे थोरे भूषन पहरि प्यारी,
जलजंत्र मेह मनोहर चहचारी है॥ ७२॥
बैठे हैं उसीर कुंज राधिका रमण संग,
कंचन किनारी सारी डोरिया सरस है।
अरगजा खौर जाली सोसनी अंगिया मिहीं,
अतरौटा सूती अति कोमल परस है॥
दसौं दिसा नीर अनगिनि तें फुहारे छूटें,
फूल कौ विछौंना ब्यार रस कौ बरस है।
थोरें थोरें भूषण मनोहर जलज मणि,
ग्रीषम बिहार शोभा सागर दरस है॥ ७३॥
जल जंत्र गेह मांह फूल की तिवारी फबी,
कुसुमित सेज प्रिया पीउ सुख देंनी हैं।
दोऊ चरचार पगे नयौ नेह रगमगे,
हँसन तरंग रुरै मोतीमाल बेणि हैं॥
छिनु छिनु नई रीत जीतें हारें हारें जीतें,
मेटी मेंह नेंनन कटाछें कोर पैंनी हैं॥
राधिका रमण रीझ मनोहर रहे भीज,
छूटत लपट झुकि आवैं अलि सैंनी हैं॥ ७४॥

फूल कौ बंगला परिजंक बन्यौं छूटे नल,
तिरछौंहें दोऊ दिसा मानौं जल छए हैं।
अंग अंग भूषन बनाउ नील पीत छबि,
फबि रही नेंनन निवास नित लए हैं॥
अरस परस स्वाद सरस कपूर पान,
दरस परस सरस महामत्त भए हैं।
राधिका रमण प्रेम राचे नील मणि हेम,
देखें मनोहर तन मन बारि दए हैं॥ ७५॥

कंचन कलित नील रतन तिवारी बन्यौं,
झरोखानि पवन गतागति की खानि हैं।
चादर फुहारे जल छाइ रहे चारौं ओर,
राधिका रमण निसि जागे श्रम मानि हैं॥
सुमन सुगंध लै संवारयौ वर परिजंक,
मन्दिर मनोहर विचित्रता की खानि है।
पौढ़े दोऊ नागर सुथरौ उपरैंना तानि,
मंद मंद हँसनि निभृत बतरानि हैं॥ ७६॥

पटा मणि फटिक में किधौं इन्द्रनील मणि,
कंचन जराव जग मग शोभा लहरें।
किधौं सुरसरिता सों भानुजा मिलाप विधि,
सुता कौं निरखि अनिमेख न्हाव गहरें॥
जसके सहित किधौं उज्वल सरस रस,
अनुराग मिले मानों नील पीत पहरें।
राधिकारमण दोऊ कुसुमित सेज सोए,
छवि की झकोर नेंन मनोहर ठहरें॥ ७७॥

ललिता बजाई बीन सुघराई तान सुनि,
उठि बैठे सेज दोऊ केऊ सोभा पावहीं ।
भुजनि उचाइ अगराइ मृदु मुसकाइ,
हेरनि सिंगार मैंन नैंन मन भावहीं ॥
आरसी अगूंठी मुख निरखि सुधारिबे कौं,
देहि न चपल कर छबि सौं बचावहीं ।
राधिकारमण रंग फबि रहे अंग अंग,
मनोहर नख सिख आनंद न मावहीं ॥ ७८ ॥
मिसरी सवारि जल सीतल में डारि मिर्च,
चूरिकें सुधारि दै मिलाइ महा हेत हैं ।
कनक कटोरा भरि अतर कपूर करि,
प्रिय सहचरि हाथ छकि झुकि हेत हैं ।
राधिका रमण सोइ खस के भवन मोरि,
अंग उत्थापन तृषा रस के निकेत हैं ।
मनोहर बार बार सुर के अधर धार,
पानक पीवत पंचेन्द्रिय सुख लेत हैं ॥ ७९ ॥
धोती सेत पहरी बिहार जल प्रिया पीउ,
सखी चारौं ओर बाढ्यौ कौतुक विशेष है ।
कबहूँ लडैती आप कभू परिजन मिलि,
राधिका रमण घन करें अभिषेक हैं ॥
प्रीतम हबासी जल डारें आस दियें कियें,
परम उछाह एक तें सरस एक हैं ।
पाछें एक बार मनोहरन बरषा लाइ,
सबन रिझावैं बार बार यहै टेक हैं ॥ ८० ॥

उठे जल केलि तें अंगौंछि अंग सौंधौ सन्यौं,
सेत बागौं भूषन जलज मणि कीनें हैं।
राधिकारमण मिलि बैठे नग चौंतरी में,
बन जोग भोजन सखी लै आगैं दीनें हैं।
पानक कपूर मिश्री मेवा औ सरदा आदि,
अनन्तास विविध मिठाई स्वाद लीने हैं।
खीरा तरबूँज आंम कटहल दही मठा,
सिखरनी दूध मनोहर चन्द भीने हैं॥ ८१॥
यमुना के तीर धीर मलय समीर ढुरै,
लटकि कदम्ब साखा नीर परसत हैं।
नीलमणि हीरनि जटित कल मन्डल में,
राधिकारमण कैसे नीके दरसत हैं।
केसर कपूर मेल विविध सुगन्ध रेल,
चंदन चरचि बागे सोभा सरसत हैं।
कंचन कलित स्वच्छ पगिया कनक गुच्छ,
मनोहर चन्द्रिका में रंग बरसत हैं॥ ८२॥
अतसी कुसुम स्याम सुठौनता विश्राम,
उज्जल सरस धाम बर तरुनई है।
नैंन रतनारे तारे कारे अनियारे भारे,
कर औ चरण अधरन अरुनई है।
दीरघ कुटिल बार भौंहैं अलका लिलार,
बरुनी सुठार किधौं काम बेलि बई है।
वक्ष बाहु द्वै बिसाल राधिकारमण लाल,
मनोहर बाल रीझ अपनाइ लई है॥ ८३॥

चंदन अगर गारि केसर कपूर डारि,
मृगमद सौं सुधारि अतर मिलायौ है।
सरस सुगंधि घोर राधिकारमण खोर,
मरवट जोर जिय चाइ चर चायौ है।
झीनी धोती पाग सेत उज्जल अधिक खेत,
बूंटी सोभा देत हरि टोरा लटकायौ है।
मनोहर देखें बनें धीजै कौन कहें सुनें,
भाग फले लुनें जाकौ मन अटकायौ है ॥ ८४ ॥
सेत भूमि पर सुनें हरी पाग मोर चन्दा,
कुण्डल कनोंती अलबेली सी रगमगै।
मुरली दुलरी धुक धुकी पीत जाली झँगा,
पगा चित्र स्याम अंग खरौई जग मगै ॥
कंचन कुसुम मोती गूँज माल लाल-हिये,
छुदावली पहुचियाँ बाजूबन्द सों ठगै।
सूथन सुरंग राधारमण चमक चूरौ,
नूपुर पहिरि मनोहर नेंन में लगें ॥ ८५ ॥
नील भूमिका पै पाग मनोहर केसरी में,
जराव कौ सिर पेच मोर चन्द्रिका दियें।
दाहिनें कनक गुच्छ लटकनि पर स्वच्छ,
झगा बूँटेदार पगा सूथन समें कियें ॥
कुण्डल किरीट करे मोती माल बाजूबन्द,
नूपुर झंगौली जगमग श्यामता दियें।
राधिकारमण लाल सोभित सिंगारी प्यारी,
करत अलाप चारी सुख मुरली लियें ॥ ८६ ॥

जाली कौ जंगाली रंग झगा स्याम सिंधु अंग,
छबि की तरंग झक झोरी भांत भांत में ।
बांध्यौ सुनहरी चीरा थिरकाइ हार हीरा,
देखें कौंन धीरा मन राखै निज हाथ में ॥
सूथन सवुज धारी सोभा अतलस प्यारी,
नूपुर सुरन बारी मनोहर बात में ।
राधिकारमण मुख अम्बुज दवन खोलें,
राग कौ भवन सुर मुरली की घात में ॥ ८७ ॥

नील कला निधि किधौं भूतल अभूत देखि,
पूज्यौं मंन सरस सुमन शोभा बाग सौं ।
स्याम रस सागर कौ सार लै विचित्र बिधि,
मूरति सँवारि किधौं चीते अनुराग सौं ॥
किधौं नव नागरी के पूंजी भूत मनोरथ,
उलहि उलहि रंग सनेहैं सुहाग सौं ।
राधिका रमण मिहीं तनियां लपेटि फेंटा,
औचका भई है भेटा मनोहर भाग सौं ॥ ८८ ॥

❀ अथ छप्पै ❀

झलमलात तन स्याम सीस फेंटा फबि बांधें ।
भ्रूयुग काम कमान नेंन पैंने सरसांधें ॥
सुन्दर बदन बिलास बक्ष लक्षण दृग गोंहन ।
ललित चपल भुज पीन छीन कटि तनियां मोहन ॥
जानु जंघ घटना सरस, चरण अरुण नखचन्द रबि ।
मनोहरन बरनन करैं कैसें राधारमण छबि ॥ ८९ ॥

बाँध्यौ सिर फेंटा मिहीं ऐंठवा अमैंठ करि,
छोर उकसाइ छैलतासौं रहे सनि कें ॥
तैसोई तनियां तानी तनी अटकाइ कछु,
पाछें उरसी है फन आगें रह्यौं बनि कैं ॥
कुण्डल कनौती आभा सोभा मुख मंडल की,
पीरी उपरेंना लटकायौ ठाठ ठनि कैं ।
राधिकारमण फबि छबि की गहरता सौं,
मनोहर भांत पाव धारें गनि गनि कैं ॥ ६० ॥
अरुण चरण जानु जंघ की सुठौनताई,
सुथरौ तनिया छीन कटि कसि बांध्यौ है ।
सोभित नितंब उर अंस उझकनि देखि,
मदन कमान भोंह नेंन सर सांध्यौ है ॥
ऐंठौ फेंटा सीस ससि बदन सुधा कौ जीभ,
सुधारें लटूरी नाग छौना आड फांदयौ है ।
राधिकारमण ग्रीबां भुजनि ढुराइ हँसि,
बंचन रचन मनोहर मन्त्र नाध्यौ है ॥ ६१ ॥

बर्षा बिहार वर्णनम् ।—

केसर सौं रंगी तन सुख धोती बनि रही,
मिहीं उपरैंना रंग गुलाबी चमुक है ।
बाँधी है कसुंभी पाग कलंगी कनक गुच्छ,
मध्य मोर चन्दा पौंन परसि रमक है ॥
चातृक चकोर मोर कोकिला की कुहकनि,
पुहपनि मधुपन पुंज के झमक है ।
पावस में राधिकारमण थोरे भूषण सों,
मोहत मनोहरन अङ्ग की दमक है ॥ ६२ ॥

सुथरी कसूंभी सारी कंचन किनारी फबि,
अतरौटा सेत नील धारी अतलस है।
चूंनरी में बूंटी बाँध नूं की मिंही अंग अंग,
छवि कौ तरंग सुख सागर दरस है॥
आभूषण बनें थोरे सोभित हैं जात गोरें,
भौंह की मरोरै नेंना नाचत सरस हैं।
पावस में राधिकारमण सोभा देखि देखि,
बारत मनोहरन प्राण सरबस हैं॥ ९३॥
श्याम घटा झूमि झूमि परसत दामिनि की,
दमकनि चहूँ ओर पौंन पुरवाई है।
राधिका-रमण बन बिहरन रंग रचे,
मिहीं मिही फूहीं अति लागत सुहाई है॥
बृंदावन बृक्ष बेलि रही हरियाली फैलि,
कोकिल पपीहा बेंन मेंन की दुहाई है।
कुसुम विकास गाव अलि बृंद और पास,
नृतत मयूर मनोहर सुख दाई है॥ ९४॥
बांहां जोटी राधिका-रमण बन बिहरन,
बोलनि हँसनि रीझ सुख कौ समाज है।
लटकि लटकि जात ठठकि ठठकि रहे,
अटकि अटकि मौज मेंन सिर ताज है॥
बादर आल्हरियाँ झूमि महामत्त घूमि घूमि,
डारत फुहारें मानों फुही गज राज है।
कौंध चौंध दामिनि की मनोहर स्वामिनीकी,
नई रीत रामिनि की शोभा फबी आज है॥ ९५॥

अथ तत्र सारी शुक की उक्ति प्रत्युक्ति वर्णनं :—

दापन अनारन में सारी शुक बहु तेरी,
बातें करें चोख की सुनत प्रिया पीउ है ।
सारी कहै बृंदावन ईश्वरी लडेंती तुम,
जानौं खांन पान दैकैं राख्यौ जिन जीउ है ॥
खाईये जिन कौ धन गाईये तिन कौ गुण,
वचन प्रमान इहै आचरण सीउ है ।
राधिका-रमण जस गावै जिन के ह्वै बस,
ताकौं गांऊ एहो सुक मनोहर हीउ है ॥ ९६ ॥
कहैं सुक सुनौं सारी झूँठी सांचीं बहुतेरी,
कहे की बिलगु नाहीं मानियें सुभाउ है ।
बृंदावन चंद जू कौ बृंदावन कहियत,
जानें सब सज्जनता कहूँ न दुभाउ है ॥
रहौ जाके देस ताकौ जानौं न अपन ऐसी,
कहौं जैसैं महाविज्ञ ऐसोई कुभाउ है ।
राधिका-रमण नाम नींके कै बिचारि देखौ,
भावै अर्थ मनोहर याही में जु भाव है ॥ ९७ ॥
आगें नाउ राधिकारमण ताकें पाछें होत,
देखौ जाके संग तें जगत जानें लाल कौं ।
सदाई अधीन रहै भावै तिहैं सोई कहैं,
परै जोई सहैं गहैं उनही के ख्यालकौं ॥
देखे तें जियत जीउ अन देखें दहै हीय,
पल पल करत सुधार बहै बाल कौ ।
मनोहर नैंन जानें देखें सुनी कौंन मानें,
मन मुखी बातेबानें जान तन हाल कौं ॥ ९८ ॥

देखौ हरियारौ बृंदावन श्यामता की छबि,
जहाँ तहाँ फैली अति लागत सुहाई हैं।
पंछी मृग वृक्ष बेलि यमुना कमल मेलि,
चंवरीक इंद्रनील मणि दुति भाई हैं॥
और कहा कहूँ रस राज जाके अंग संग,
ताकी पटतर अहो कहौ कौनें पाई हैं।
राधिका-रमण यातें मनोहर सबै भातें,
ताकी बातें वेदनि में नेति नेति गाई हैं॥ ९९॥

गौर स्याम आभा मिलि हरयौ रंग होत यह,
जानें जग यातें सुख रोम रोम पावहीं।
गौर छबि जीति भांन लाडिली जू अंग दुति,
द्वारा पोख्यौ जात यहै बुध जन गावहीं॥
जहां स्याम वृक्ष तहां पीत लता देखौ किनि,
अरस परस शोभा सिंधु कौं बढ़ावहीं।
राधिका-रमण अनुराग मिले स्याम रस,
मनोहर हौंहिं उभैं कोकहि पढ़ावहीं॥ १००॥

गिरिवर कर धरि राख्यौ जिन ब्रज जन,
ताकौ गुन कासौं कहौं पटतर दीजियै।
जानें सुर नर मुनि बृंदावन रजधानी,
श्री गोविंद अभिषेक सुनि सुनि जीजियै॥
सुंदर सुसील देखि मदन कौ मोह होत,
परम उदोत कैसैं सरवर कीजियै।
राधिका-रमण दृग थके देखे मनोहर,
छबि की तरङ्ग नैंन भरि भरि पीजियै॥ १०१॥

छिन छिन गिरिराज धरन चकोर जीउ,
ज्यावत बदन शशि सुधा मुसकानि है।
श्री गोविन्द अभिषेक आगें भयौ जानें हम,
पाछें कछु भई सुधि महा सुख दानि है॥
वृन्दाबन ईश्वरी के उमरा ही अभिषेक,
त्रिजगत मांह रस रीत पहिचानि हैं॥
यातें राधाजू के आधीन अति रमण लाल,
लोइन मनोहरन देखिबे की बानि है॥ १०२॥
जिन्हैं कहौ बेद भेद भाषै तिन नेति नेति,
तिन की कहूँ मैं कछु अद्भुत रीति है।
सोइ बानी सुनैं जब प्यारीजू के बैन तब,
भूलत अपनी देह मनोहर मीत है॥
यातैं अनुमान होत निगम बिचार सार,
सफल भयौ प्रिया मैं प्रेम की प्रतीत है।
राधिकारमण जानैं और की कही को मानैं,
परिजन सुख सानैं सुधि की व्यतीत है॥१०३॥

॥ श्री सावनी तीज के कवित्त ॥

हरियारी तीज में हिंडोरें बृषभान राय,
रतन जटित कीनैं सोभा सरसाने हैं॥
झूलत लड़ैती तापै आभूषन जगमग,
सारी है कसुम्भी रंग अङ्ग दरसानें हैं।
चारों ओर झूले बनबारी न्यारी गोपन की,
रमकि रमकि रोम रोम हरसानें हैं॥
राधिकारमण अनिमेष अवलोकि रहे,
मनोहर छबि की अबधि बरसाने हैं॥ १०४॥

सारी है सुरंग झीनी कञ्चन किनारी बनी,
झालर जलज मणि फब्यौ मुखचन्द है।
चूनरी सुकेशी हरी बूँटी लाल भूमि पर,
अतरौटा अतलस झवा नीबी बन्द है॥
रमकि रमकि झूलैं भूषन झमकि झोटा,
फहरात छोर मुसकानि मंद मंद है।
बकि रहे राधिकारमण देखि देखि छबि,
मनोहर नैंन ऐंन मनसिज फंद है॥ १०५॥

चारों ओर घोर घटा दामिनी लहलहानि,
मंद मंद फुहीं पौंन सीतल सुहाई है।
चढिकें हिंडोरे दोऊ बहसि मचक देत,
लचकि लचकि लंक आछी छबि पाई है॥
गावत मलार राग सरस उभै सुहाग,
परसत अंग अंग रुचि उपजाई है।
राधिकारमण रोम रोम हुलसानि फबी,
हँसि मुसकानि मनोहर सुखदाई है॥१०६॥

ऊँची अति नीप साखा झूलिबे की अभिलाषा,
बांधी है बिशाखा डोरी पंच रंग पाट की।
पटली जटित हीरा चढे दोऊ एक जीरा,
सुनहरी चीरा सारी सुघराई घाट की॥
उमगि उमगि झूलें उभै अंग संग फूलें,
अपनपौ भूलैं रुचि नई नई ठाट की।
राधिकारमण शोभा मनोहर औरै आभा,
हियें उठै गोभा परिपाटी प्रेम बाट की॥१०७॥

मलयज खंभन में कंचन जटित मोती,
झालरि मयारि डांडी मरुवे सुवन हैं।
तैसौई हिंडोरो बनि ठनि बैठे प्रिया पीउ,
तकिया लगाइ एक प्राण दोऊ तन हैं॥
झुलवत आगें पाछें द्वै द्वै सखी गावैं गीत,
सबै मिल जील सुर गरजत घन हैं।
ऊंचे चित्र चंद्रातप झिम झिम बरषा में,
मनोहर सुख लेत राधिकारमण हैं॥ १०८॥

प्रेम कै हिंडोरें बलि झूलत हैं प्रिया पीउ,
नील पीत बागे बनें सोभा उछरत है।
बोलनि हँसनि गान एक रस रमक तान,
मान सौं रमकि झोटा स्वासन भरत हैं॥
भौंह की मरोर में अनंग अंग पावैं कोर,
बोरि बोरि रंग अंग अंगनि धरत हैं।
राधिकारमण भारि मनोहर चह चारी,
लोइन चतुर चारि खंजन लरत हैं॥ १०९॥

पंच खन उपर रंगीली चित्र सारी बनी,
चहूँ ओर जालरंध्र पवन गवन है।
बरसत घोर घोर दामिनी थरहरानि,
मंद मंद गरजनि सुख के भवन हैं॥
मणि के प्रदीप स्वेत सज्या महा मृदुता में,
बिलसत प्रिया पीउ उपमा कवन है।
मनोहर बीरा रस बिबि मुख चंद लसैं,
बोलति खुलनि हसें राधिका रमन है॥ ११०॥

वरषें उमड़ि मेह देह की संभार नाहिं,
मोहें अति आनंद की गोभा हुलसत है।
मणि की अटारी जारी रंध्रन पवन भारी,
पलका पै राधिकारमण बिलसत हैं॥
सिंजित मनित खानि भनित थरहरानि,
भौंह की विचित्र बानि तानि दरसत है।
नैंन की चपलताई खंजरीट की लराई,
मनोहर सुघराई रंग बरसत है॥ १११॥

राधिकारमण रस सागर सरस सत,
पढ़त दिबस रैंनि चैंन नाहीं मन में।
मेबन की अभिलाष राखत छिन ही छिन,
बिन दरसन तलफत बृंदाबन में॥
ऐसौ बडभागी पै करत कृपा अभिमत,
निरखै युगल हित पुलकित तन में।
मनोहर करै आस बास नित निकट में,
रहै श्रीगोपालभट्ट जू के परिकर में॥ ११२॥

अरिल्ल:--

संबत सतरह सै सतावन जानि कें।
सावन बदि पंचमी महोत्सव मानि कें॥
निरखि श्रीराधारमण लडैंती लाल कौं।
हरि हाँ मनोहर संपूरन बनराज विचारचौ ग्याल कौं॥११३॥

इति श्री कविवर मनोहर जी कृत राधारमण रस सागर संपूर्ण॥

———o———

❀ श्री नवगोविंद देवो जयति ❀

# अथ गोपाल स्तबराज लिख्यते ।

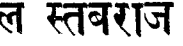

नब नीरद घन स्याम धाम अभिराम बिहारी ।
नीलेंदीबर नेंन बेंन रस एंन जु भारी ॥
गोपी सुत जुत ललित लील जग प्रगट अघट जस ।
बर अनूप रस भूपन महुँ गोपाल रूप अस ॥ १ ॥
रुचिर रचित सुचि चिकुर सीस घुंघरारे कारे ।
मोर पुच्छ की स्वच्छ लसन कबि बरनत हारे ॥
सुशम कुसम वर नीपजुक्त वनमाल बिराजे ।
कुंडल लोल अमोल कपोलनि अति छाबि छाजै ॥
मुक्ताहार उदार चारु उर लसत शुभग हद ।
कंचन रचित किरीट सुसोभित नूपुर अंगद ॥
मन्द पवन बस विवस चारु चय चीर चलत भल ।
सधर अधर पुट न्यस्त बांसुरी रुचिर मधुर कल ॥
जिहँ रव सौं आनंद कंद ब्रज नंद नंद सुत ।
बार बार गोपाल नारि चित करत मोह जुत ॥
वाला बदन सरोज सुधा रस पान करत अस ।
प्रेमी परम प्रवीन मनोहर मत्त भ्रमर जस ॥
तिन के मन रस विवस बहुरि जुत छोभ कराहीं ।
मृदु मुसिकनि जुत बंक विलोकनि में सचुपाहीं ॥
नव जीवन जुत अंग प्रेम रस रंग परसपर ।
भूषन सोभित गात बहुरि निरदूषन अंबर ॥

अस गोपिन मधि बसत कबहुँ इमल सत गुपाल ।
उमड़ि घिरयौ घन घमडि सुजिम बिच दामिन जल ॥
कबँहु जमुन जल लील कब हुँ वर मित्रनि मांहीं ।
जुद्ध केलि रस झेलि कराहीं अति सचु पाहीं ॥
नंदलाल गोपाल हरन दुख वर सुख कारी ।
टेरहिं गाइनि कौं जु कबहुँ भरि चाइनि भारी ॥
कंपित बृंदाबिपिन जमुन जल परस अनिल बल ।
अमल कदम की बिमल छांह जिंह माह लसत भल ॥
ता में नव गोविन्द चंद नव नागर नगधर ।
लसत कबहुँ सुख साज सुखद ब्रजराज कुंवरवर ॥
रतन जटित गिर निकट प्रगट रत्नासन मांही ।
कंचन मंडप माहिं कबहुँ जँहँ सुर द्रुम छाहीं ॥
गिर गोबर्द्धन मांहिं जहां निसि द्यौस अमित सुख ।
सुसम बसंती कुसुम सरस सत करत दिसा मुख ॥
ता में कबहुँ कसत लसत हिय अति सचु पावत ।
रास रसोत्सुक रसिक रंगीलौ रस बरसावत ॥
कबहुँ छत्र सम वाम हाथनग नग धर धरि अति ।
दूरि किये जल धार क्रूर मति प्रेरित सुरपति ॥
ललित बेंन मुख गलित नाद सुनि वर हुंकार करि ।
वत्स सहित हित चाय नैचिकी निरखि रहैं हरि ॥
हरि ही कौं करि गांन प्रेम भरि राखत हिय कौं ।
हरिलीला अनुकरन लेत सुख देत जु जिय कौं ॥
दंड पास परकास सुजिन गोपन के हाथन ।
अधिक सुसोभित कबहुँ जु नग धर तिनके साथन ॥
नारदादि मुनि वृंद बेद बेदांग सार पार गत ।
बचन रचन जुत प्रीति रीति जिहिं गान करहिं नित ॥

इहि विधि जे चिंतवनि करत भक्ति युत देववर ।
नित प्रत ही स्तुति करत दिवस निसि चाय भाय भरि ॥
तिन कों नव गोविंद चंद रस कंद सुनहु भल ।
लेत तुरित अपनाय देत पुन वर वांछित फल ॥
मानि मानि सनमान तिन्है नित राज सभा महिं ।
जगजन के प्रिय जानि होय अपमान कबहुँ नहिं ॥
तिन भक्तनि में बसै चंचला लसै अचल अति ।
वावदूक रसवंत अंत पुन लहै परमगति ॥
संतनि की सिख पाय सुरिप गौतम के पायन ।
करि प्रकाश नति रास भाय भरि ढ़रि वर चायन ॥
गोपाल स्तवराज की जु भाषा सु जथा मति ।
श्री वृंदावन चंद दास लै रची रुचिर अति ॥
जो नर याहि जु पढै रढै नित वढै खेम सौं ।
कढै अंग दुति चढै रंग अंगन मढै प्रेम सौं ॥

इति श्री वृंदावनदासजी कृत
गौतमीय तंत्रोक्त गोपाल स्तवराजकी—
❀ भाषा सम्पूर्णः ❀

---

यह ग्रंथ श्री गोस्वामी बनमालीलाल जी का ( वृंद्रावन ) पुस्तकालय से मिला है ।

श्री राधारमण रस सागर मिलने का पता—

१—श्री राम निवास खेतान की दुकान सवामनशालग्र के मन्दिर के नीचे ( लोई बाजार ) वृन्दावन ।

२—बाबा महन्त उद्धारणदासजी, कुसुमसरोवर, गबालि मन्दिर, पो० राधाकुण्ड, ( मथुरा ) ।

३—हीरालालजी की दूकान, चौकबाजार, मथुरा ( पि के सामने ) ।

प्रकाशित प्राचीन पुस्तकें—

( ब्रजभाषा में ) १—माधुरीबाणी, २—बल्लभरसिकज बाणी, ३—गीतगोविन्द, ४—गीतगोविन्द पद, ५—हरिल ६—श्री चैतन्यचरितामृत, ७—गदाधरभट्ट जी की ब ८—सूरदासमदनमोहनजी की बाणी, ९—वैष्णव वन्दन भक्तनामावली, १०—प्रियादासजी की ग्रंथावली, ११—प्रेमभ चन्द्रिका, १२—विलापकुसुमाञ्जली १३—गौरांगभूषणमंजावत १४—राधारमण रस सागर ।

( संस्कृत भाषा में ) १—अर्च्चाविधि, २—प्रेमसम्प ३—भक्तिरसतरंगिणी, ४—गोवर्द्धनशतक ।

❀ समर्पणपत्रम् ❀

श्री श्री राधारमण चरणदास देवस्यानुचर प्रवरस्य
सकल देश प्रसिद्ध कीर्त्तिराशेः प्रेम मात्र सर्व्वस्व
कृतस्य, निरन्तर सात्विक भावा—वल्या
विभूषितस्य, दी न ता सा ग रस्य,
मधुर स्वरालापैः सर्व्वदा गौर
कीर्त्तनकर्त्तुः श्रीरामदासेति
भाम्ना प्रसिद्धस्य, मदीय
आराध्यदेवस्य, श्रीगुरु
देवस्य, बाबाजीमहा
राजस्य प्रीत्यर्थे
**समर्पितेयं बाणी**

---

मुद्रकः—लोक साहित्य, प्रेस, घीयामण्डी, मथुरा ।